इक्कीसवीं सदी के प्रमुख हिन्दी उपन्यासों में पर्यावरणीय समस्याएँ

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) दयालबाग़, आगरा के अन्तर्गत

हिन्दी विषय में पीएच.डी. की आंशिक पूर्ति हेतु शोध प्रबन्ध की

प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थी
आशा कुमारी

शोध निर्देशिका

डॉ. दयाल प्यारी सिन्हा
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, कला संकाय

हिन्दी विभाग, कला संकाय

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा-282005

2023

शोध परिचय

पर्यावरण एक व्यापक अवधारणा है। इसके अंतर्गत संपूर्ण सृष्टि समाहित है। हमारे चारों ओर का आवरण ही पर्यावरण है। हमारा पर्यावरण पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश, वायु आदि अनेक घटकों से निर्मित हुआ है। पर्यावरण की गुणवत्ता में कमी होने से पर्यावरण प्रदूषण होता है।

वर्तमान समय में भारत में पर्यावरणीय समस्याएँ चुनौती के रूप में सामने आ रही हैं। भूमंडलीकरण और उदारीकरण ने हमें विनाश के मार्ग पर धकेल दिया है । मनुष्य अपने तुच्छ स्वार्थों की पूर्ति के लिए जंगलों की अंधाधुंध कटाई और खनिज संसाधनों का दुरुपयोग कर रहा है । औद्योगीकरण और नगरीकरण के कारण पर्यावरण असंतुलन बढ़ता ही जा रहा है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और मृदा प्रदूषण में वृद्धि होती जा रही है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण संपूर्ण मानव जाति के अस्तित्व पर संकट मंडरा रहा है। विकास की अंधी दौड़ में मानव विनाश की ओर अग्रसर हो रहा है।

भारत की विकास नीति किसी न किसी रूप में पर्यावरणीय असंतुलन के लिए उत्तरदायी है। इस कारण भारत में पर्यावरण संरक्षण हेतु समय-समय पर अनेक आंदोलन किए गए। इन आंदोलनों के माध्यम से लोगों की भूमि, जंगल आदि से जुड़े परंपरागत अधिकारों को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया गया। इन आंदोलनों में बिश्नोई आंदोलन, चिपको आंदोलन, अप्पिको आंदोलन आदि प्रमुख हैं। इसी प्रकार भारत में समय-समय पर पर्यावरण संरक्षण हेतु अनेक कानून भी लागू किए गए। जब पर्यावरण संरक्षण के सामाजिक और राजनैतिक प्रयास विफल हो गए तब पर्यावरणीय संवेदना साहित्यकार की संवेदना से जुड़ गई । फलस्वरूप हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय संवेदना दृष्टिगत होने लगी ।

आदिकालीन तथा मध्यकालीन कवियों द्वारा रचित काव्य में पर्यावरणीय संवेदना कम ही दिखाई पड़ती है क्योंकि तत्कालीन समाज में प्राकृतिक पर्यावरण से संबंधित समस्याएँ विद्यमान नहीं थीं। आदिकालीन काव्य में प्रकृति के प्रति प्रेम की भावना दृष्टिगत होती है। प्रकृति- वर्णन की दृष्टि से विद्यापति द्वारा रचित 'पदावली' अद्वितीय है। किसी राजा के आगमन के समान ऋतुराज बसंत का स्वागत विद्यापति के प्रकृति प्रेम को दर्शाता है। भक्तिकालीन कवियों में तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, मलिक मोहम्मद जायसी आदि की रचनाओं में प्रकृति- प्रेम दृष्टिगत होता

है। तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' में प्रकृति को मानव-जीवन के अभिन्न अंग के रूप में चित्रित किया गया है। 'रामचरितमानस' में सरयू नदी की निर्मलता, वृक्षारोपण का महत्व, स्वच्छ जल की आवश्यकता आदि वर्णित है। रहीम और रसखान ने भी प्रकृति का मनमोहक चित्रण किया है। रीतिकालीन कवियों ने प्रकृति का आलंकारिक रूप में चित्रण किया। देव, बिहारी, पद्माकर, सेनापति आदि कवियों का प्रकृति-चित्रण अद्वितीय है।

आधुनिक काल में श्रीधर पाठक ने 'कश्मीर सुषमा' में कश्मीर के प्राकृतिक सौंदर्य का मनमोहक चित्रण किया। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने 'प्रियप्रवास' में प्राकृतिक उपादानों के माध्यम से राधिका के हृदय की भावनाओं का वर्णन किया। मैथिलीशरण गुप्त ने 'साकेत' और 'पंचवटी' में प्रकृति का मनोरम वर्णन किया है। जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'कामायनी' के आरंभ में प्रकृति का भयावह रूप चित्रित है। जल-प्रलय के पश्चात् संपूर्ण सृष्टि का नष्ट हो जाना संभवतः भविष्य के मनुष्य को सावधान करने का संकेत है। सुमित्रानंदन पंत द्वारा रचित 'पल्लव' में प्रकृति की रमणीयता के दर्शन होते हैं। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने 'संध्या सुंदरी' कविता में संध्या को सुंदर स्त्री के रूप में चित्रित किया है।

पर्यावरण असंतुलन के कारण मानव जाति को बाढ़, अकाल जैसी प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ता है। नागार्जुन ने 'अकाल और उसके बाद' कविता में प्राकृतिक विनाश का चित्रण किया है। रामधारी सिंह दिनकर ने 'कुरुक्षेत्र' में वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा प्रकृति के विनाश का चित्रण किया है। केदारनाथ सिंह ने 'पानी की प्रार्थना' कविता के माध्यम से भविष्य के जल संकट के प्रति आगाह किया है।

आधुनिक काल के गद्य साहित्य के प्रारंभिक दौर में प्रतिपाद्य विषय के रूप में पर्यावरणीय समस्याओं का चिंतन परिलक्षित नहीं होता है। धीरे- धीरे पर्यावरणीय समस्याओं को एक गंभीर विषय के रूप में मान्यता मिली और गद्य साहित्य में पर्यावरणीय समस्याओं का अंकन प्रारंभ हुआ। कथा सम्राट प्रेमचंद के साहित्य में पर्यावरणीय संवेदना दृष्टिगत होती है। प्रेमचंद ने 'पूस की रात' कहानी में किसान-जीवन की त्रासदी को प्राकृतिक परिवेश से जोड़कर चित्रित किया है और 'दो बैलों की कथा' कहानी के माध्यम से प्रकृति के उदात्त संवेदनात्मक पक्ष का अंकन किया है।

अज्ञेय कृत 'अरे यायावर रहेगा याद' तथा निर्मल वर्मा कृत 'चीड़ों पर चाँदनी' यात्रा वृत्तांतों में प्रकृति के साथ मानवीय संबंधों को अभिव्यक्त किया गया है।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य के केंद्रीय विषय के रूप में पर्यावरणीय संकट का चित्रण हुआ है। साहित्यकारों ने औद्योगीकरण और नगरीकरण के फलस्वरूप बढ़ते हुए पर्यावरण प्रदूषण और पर्यावरण असंतुलन का चित्रण अपनी रचनाओं में किया। स्वातंत्र्योत्तर युग की रचनाओं में जलवायु- परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाओं, जंगलों की कटाई, भूमि-दोहन, जल-संकट आदि के प्रति गहरी चिंता अभिव्यक्त की गई है। जब भूमंडलीकरण, उदारीकरण, बाजारवाद आदि के घातक परिणाम सामने आने लगे तब साहित्यकारों ने अपने साहित्य के केंद्रीय विषय के रूप में इन मुद्दों का चित्रण किया। ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन- क्षय, अम्लीय वर्षा आदि अनेक गंभीर मुद्दे साहित्यकारों के चिंतन के केंद्र में आए। महुआ मांझी कृत 'मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ' उपन्यास में झारखंड के आदिवासी क्षेत्रों में बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा किए जा रहे उत्खनन का वर्णन किया गया है, जिसका प्रभाव आदिवासियों की भूमि, जंगल और जल पर पड़ रहा है। पंकज सुबीर द्वारा रचित उपन्यास 'अकाल में उत्सव' प्राकृतिक आपदाओं के संदर्भ में किसान जीवन की त्रासदी का चित्रण करता है। नासिरा शर्मा कृत 'कुइयां जान' जल-संकट को केंद्र में रखकर लिखा गया उपन्यास है। रणेन्द्र के उपन्यास 'ग्लोबल गांव के देवता' में आदिवासी क्षेत्रों में पर्यावरणीय समस्याओं को उभारा गया है। सूर्यनाथ सिंह कृत 'चलती चाकी' उपन्यास किसान-जीवन और पानी की समस्या को लेकर लिखा गया उपन्यास है। संजीव के उपन्यास 'जंगल जहाँ शुरू होता है' को सजीव रूप प्रदान करने में आदिवासी क्षेत्रों के जंगल और वनस्पतियों का मुख्य योगदान है। संजीव के उपन्यास 'रह गई दिशाएँ इसी पार' में पारिस्थितिक-समस्या की चर्चा की गई है। संजीव द्वारा रचित उपन्यास 'फांस' प्राकृतिक आपदाओं के संदर्भ में किसान जीवन की त्रासदी का चित्रण करता है। नवीन जोशी ने 'दावानल' उपन्यास का सृजन 'चिपको आंदोलन' को वैश्विक पटल पर सुस्पष्ट करने के लिए किया। कामतानाथ के उपन्यास 'पिघलेगी बर्फ़' में तिब्बत के प्राकृतिक पर्यावरण के विविध पक्षों का वर्णन किया गया है। कुसुम कुमार के

उपन्यास 'मीठी नीम' में पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया है। भगवती शरण मिश्र द्वारा रचित 'लक्ष्मण रेखा' पर्यावरण की समस्या पर केंद्रित उपन्यास है। शांता कुमार ने अपने उपन्यास 'वृंदा' में एक आंचलिक प्रेम कथा को पर्यावरण की चिंता में गूंथा है। अभिमन्यु अनत के 'एक उम्मीद और' उपन्यास का मूल उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित करना है। अलका सरावगी के उपन्यास 'एक ब्रेक के बाद' में चित्रित है कि बहुराष्ट्रीय कंपनियां औद्योगिक विकास की आड़ में प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर रही हैं। भालचंद्र जोशी का उपन्यास 'प्रार्थना में पहाड़' आदिवासियों के जीवन पर आधारित है लेकिन इसकी पृष्ठभूमि में पर्यावरण ही है।

इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में पर्यावरणीय समस्याओं के चित्रण के लिए शिल्प विधान के लगभग सभी साधनों को ग्रहण किया गया है। इन उपन्यासों में कथ्य की स्पष्ट रूप से अभिव्यक्ति के लिए सरल और सहज भाषा-शैली का प्रयोग किया गया है, जिससे पाठक को अर्थ ग्रहण करने में समस्या नहीं आती।

इस प्रकार इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में पर्यावरण के प्रति गंभीर चिंतन दिखाई पड़ता है। इन उपन्यासों में लेखकों का पर्यावरण के प्रति नवीन दृष्टिकोण और सजगता दिखाई पड़ती है। इन उपन्यासों में पर्यावरण प्रदूषण से संबंधित गंभीर प्रश्न और मुद्दे उठाए गए हैं।

उद्देश्य :

'इक्कीसवीं सदी के प्रमुख हिन्दी उपन्यासों में पर्यावरणीय समस्याएँ' विषय पर शोध कार्य करने का प्रमुख उद्देश्य हिन्दी उपन्यासों में पर्यावरणीय समस्याओं पर प्रकाश डालना है । इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में पर्यावरण के प्रति उपन्यासकारों की चिन्ता तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रयास परिलक्षित होते हैं । अत: शोधकर्त्री ने इन प्रयासों को सामने लाने को उद्देश्य हेतु इस विषय का चयन किया है ।

उपयोगिता/महत्व :

वर्तमान समय में व्यक्ति स्वार्थ के वशीभूत होकर प्राकृतिक संसाधनों को विनष्ट करता चला जा रहा है फलस्वरूप पर्यावरण-असन्तुलन में वृद्धि होती जा रही है । इस स्थिति का प्रभाव हिन्दी साहित्य पर भी परिलक्षित होता है। साहित्यकारों ने पर्यावरण-संरक्षण के प्रति अलख जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है अत:

शोधकर्त्री ने 'इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में पर्यावरणीय समस्याएँ' विषय के महत्व को देखते हुए शोध-कार्य हेतु विषय का चयन किया ।

शोध कार्य की प्रविधि :

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु शोधकर्त्री द्वारा इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में पर्यावरणीय समस्याओं का अध्ययन-अनुशीलन किया जायेगा । प्रस्तावित शोध प्रबन्ध के लिए वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक शोध प्रविधि अत्यन्त समीचीन रहेगी, जिससे प्राप्त सामग्री का विश्लेषण करके उसकी समीक्षा की जा सके।

शोध विषय से सम्बन्धित अन्य शोध कार्य :

विविध विश्वविद्यालयों में अनेक शोधकर्ताओं ने हिन्दी साहित्य में पर्यावरणीय समस्याओं के अनेक पहलुओं पर शोध किए हैं, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं –

1. इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की हिन्दी कविता में पर्यावरणीय चेतना- (शोधार्थी) सुरेन्द्र कुमार जैन, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, सन् 2016.
2. आधुनिक हिन्दी कविता में पर्यावरणीय चेतना-(शोधार्थी) नेहा हंस,
   गुरू नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, पंजाब, सन् 2018.
3. छायावादी काव्य में पर्यावरणीय चेतना- (शोधार्थी) राम रतन सैन, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, सन् 2021.

उपर्युक्त शोध प्रबन्धों में हिन्दी कविता में पर्यावरण चेतना विषय पर शोध कार्य हो चुका है परन्तु शोधकर्त्री द्वारा चयनित विषय 'इक्कीसवीं सदी के प्रमुख हिन्दी उपन्यासों में पर्यावरणीय समस्याएँ' को समग्र दृष्टि से देखने का प्रयास किया जायेगा । शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तावित विषय सर्वथा मौलिक एवं नवीन है ।

शोध कार्य की मौलिकता :

'इक्कीसवीं सदी के प्रमुख हिन्दी उपन्यासों में पर्यावरणीय समस्याएँ' विषय पर अभी तक कोई शोध-कार्य नहीं

हुआ है । शोधकर्त्री का यह शोध कार्य पूर्णत: मौलिक एवं नवीन होगा। इस शोध कार्य के माध्यम से शोधकर्त्री द्वारा हिन्दी साहित्य को एक नवीन दृष्टि देने का प्रयास किया जायेगा ।

शोधार्थी

आशा कुमारी

प्रस्तावित रूपरेखा

इक्कीसवीं सदी के प्रमुख हिन्दी उपन्यासों में पर्यावरणीय समस्याएँ

प्रथम अध्याय पर्यावरण : स्वरूप, आधार एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

1.1 पर्यावरण : अर्थ, परिभाषा एवं घटक

1.2 इक्कीसवीं सदी का बदलता परिवेश और पर्यावरणीय समस्याएँ

1.3 भारत में पर्यावरणीय समस्याएँ और विभिन्न आंदोलन

1.4 भारत में पर्यावरणीय समस्याएँ और कानून

1.5 भारत में पर्यावरणीय समस्याएँ : रचनात्मक साक्ष्य

द्वितीय अध्याय : इक्कीसवीं सदी के पूर्व के हिन्दी उपन्यासों में पर्यावरणीय समस्याएँ

2.1 पूर्व प्रेमचंद युगीन हिन्दी उपन्यासों में पर्यावरणीय समस्याएँ

2.2 प्रेमचंद युगीन हिन्दी उपन्यासों में पर्यावरणीय समस्याएँ

2.3 प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यासों में पर्यावरणीय समस्याएँ

2.4 स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में पर्यावरणीय समस्याएँ

तृतीय अध्याय : इक्कीसवीं सदी के प्रमुख हिन्दी उपन्यासों में पर्यावरणीय समस्याएँ

3.1 विकास, विस्थापन एवं पर्यावरणीय संकट

3.2 जलवायु परिवर्तन

3.3 पर्यावरण असंतुलन

चतुर्थ अध्याय : इक्कीसवीं सदी के प्रमुख हिन्दी उपन्यासों में पर्यावरणीय समस्याएँ

प्राकृतिक आपदाएँ

भूमि दोहन

जल संकट

अन्य पर्यावरणीय समस्याएँ

पंचम अध्याय : पर्यावरणीय समस्याओं से संबंधित प्रमुख हिन्दी उपन्यासों की शिल्प-योजना

5.1 भाषा

5.2 शैली

5.3 संवाद

परिशिष्ट

1. आधार ग्रन्थ
2. समीक्षात्मक हिन्दी ग्रंथ
3. समीक्षात्मक अंग्रेजी ग्रंथ
4. शब्दकोश/विश्वकोश
5. पत्र-पत्रिकाएँ
6. साक्षात्कार

नोट-शोध निर्देशक से सुझाव से अध्याय एवं शोधकार्य में 20 प्रतिशत परिवर्तन संभव है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

आधार ग्रन्थ :

क्रमांक	**पुस्तक का नाम**	**लेखक**	**प्रकाशन**	**संस्करण**
1.	अकाल में उत्सव	पंकज सुबीर	राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण-2003
2.	एक उम्मीद और	अभिमन्यु अनत	सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण-2008
3.	एक ब्रेक के बाद	अलका सरावगी	राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई	प्रथम संस्करण-

			दिल्ली	2008
4.	कुइयाँजान	नासिरा शर्मा	सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण-2017
5.	ग्लोबल गाँव के देवता	रणेन्द्र	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण-2010
6.	चलती चाकी	सूर्यनाथ सिंह	सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण-2011
7.	जंगल जहाँ शुरू होता है	संजीव	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली	प्रथम संस्करण 2010
8.	दावानल	नवीन जोशी	सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण-2008
9.	पिघलेगी बर्फ़	कामतानाथ	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण-2006
10.	प्रार्थना में पहाड़	भालचंद्र जोशी	आधार प्रकाशन, हरियाणा	प्रथम संस्करण-2018
11.	फांस	संजीव	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	प्रथम संस्करण-2015
12.	मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ	महुआ मांझी	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	प्रथम संस्करण-2012
13.	मीठी नीम	कुसुम कुमार	किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण-2014
14.	रह गईं दिशाएँ इसी पार	संजीव	राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली	प्रथम संस्करण-2012
15.	लक्ष्मण रेखा	भगतवती शरण मिश्र	वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण-2008
16.	वृंदा	शान्ता कुमार	किताबघर प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण-2008

सहायक ग्रन्थ :

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशन	संस्करण
1.	आधुनिक हिन्दी उपन्यास	डॉ. नामवर सिंह	राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद	प्रथम संस्करण-2002
2.	इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यास	प्रो. प्रमोद कोवप्रत	अमन प्रकाशन, रामबाग, कानपुर	प्रथम संस्करण-2018
3.	इक्कीसवीं सदी का हिन्दी उपन्यास साहित्य	विशाला शर्मा	स्वराज प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण-2019
4.	उपन्यास : समय और संवेदना	विजय बहादुर सिंह	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	प्रथम संस्करण-2013
5.	डॉ. संजीव के उपन्यासों में पारिस्थितिक अवबोध	डॉ. गिरिजा कुमारी आर.	गोविन्द पचौरी प्रकाशन, मथुरा	प्रथम संस्करण-2015
6.	पर्यावरण और समकालीन हिन्दी साहित्य	डॉ. प्रभाकरन हेब्बार इल्लत	वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण-2019
7.	समकालीन हिन्दी साहित्य में पर्यावरण विमर्श	डॉ. ए. एस. सुमेष	अमन प्रकाशन, रामबाग, कानपुर	प्रथम संस्करण-2016
8.	समकालीन हिन्दी उपन्यास	डॉ. विवेक राय	राजीव प्रकाशन, जयपुर	प्रथम संस्करण-2009

9.	साहित्य और पर्यावरण	राखी उपाध्याय, सुशील उपाध्याय	प्रगतिशील प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण-2011
10.	साहित्य और पारिस्थितिक दर्शन	के. वनजा	वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण-2011
11.	सामाजिक यथार्थ और कथाकार	डॉ. शहाजहान मणेर	श्रुति पब्लिकेशन, जयपुर	प्रथम संस्करण-2009.
12.	हिन्दी साहित्य में पर्यावरण संवेदना	दत्ता कोल्हारे	सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली	प्रथम संस्करण-2020